2018-19

Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

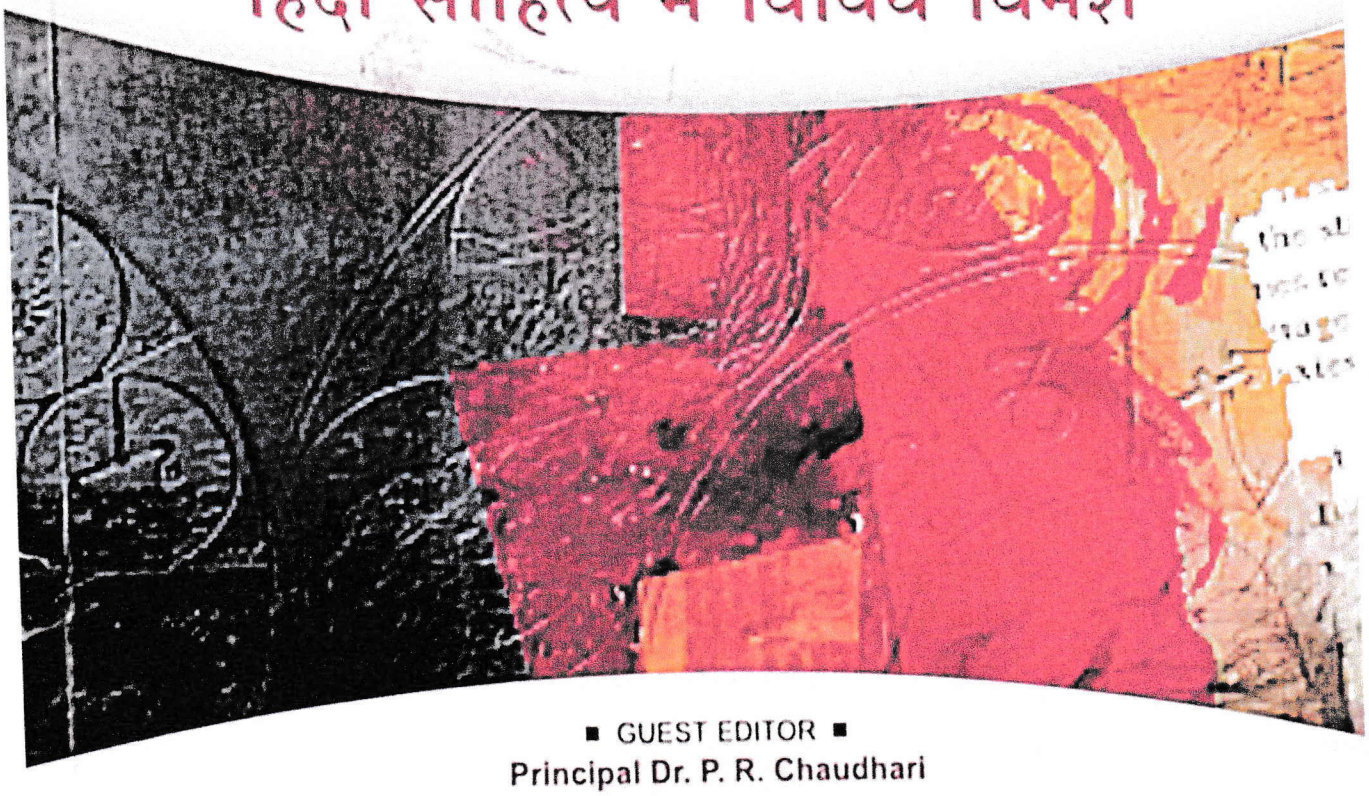

■ GUEST EDITOR ■
Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■
Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■
Dr. Kalpana L. Patil
Dr. Ishwar P. Thakur
Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■
Mr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

Lt-Dr Ravindra C. Patil

रिसर्च जर्नी

इंटरनॅशनल मल्टिडिसीप्लीनरी ई-रिसर्च जर्नल

विशेषांक क्र. १३१
१७ फरवरी, २०१९

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

संपादक मंडल
(केवल इस अंक के लिए)

अतिथी संपादक
प्राचार्य डॉ. पी. आर. चौधरी
तापी परिसर विद्या मंडल, फैजपूर द्वारा संचलित धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर.

कार्यकारी संपादक
डॉ. विजय ए. सोनजे
तापी परिसर विद्या मंडल, फैजपूर द्वारा संचलित धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर.

सह संपादक
डॉ. कल्पना एल. पाटील
डॉ. ईश्वर पी. ठाकूर प्रा. सतीश डी. पाटील
तापी परिसर विद्या मंडल, फैजपूर द्वारा संचलित धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर.

मुख्य संपादक
प्रा. धनराज धनगर
एम.जी.व्ही.एस. आर्टस्, कॉमर्स अॅन्ड सायन्स कॉलेज, येवला, जि. नाशिक.

EDITORIAL POLICIES-Views expressed in the papers/ articles and other matter published in this issue are those of the respective authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily agree with the views expressed in the articles. All copyrights are respected. Every effort is made to acknowledge source material relied upon or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsibility for any inadvertent omissions.

INDEX

No.	Title of the Paper's and Author's	Page No.
०१	हिंदी विकास, विमर्श का दृष्टिकोण और लोकसेवक मधुकरराव चौधरी आचार्य डॉ.पी.आर. चौधरी	००१
०२	'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास में किन्नर विमर्श डॉ. मधुकर खराटे	००३
०३	'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श डॉ. श्रीमती कामिनी भवानीशंकर तिवारी	००७
०४	आदिवासी कबूतरी समाज की संवेदना का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' प्रा.डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील	००९
०५	उत्तर आधुनिकता का एक जीवंत दस्तावेज : तीसरी ताली डॉ. सुरेश तायडे	०११
०६	सुनीता जैन की कविताओं में माँ के विविध रूप डॉ. रेखा गाजरे	०१४
०७	नारी मन की संघर्ष गाथा को प्रस्तुत करता उपन्यास – 'राख से ढके मन' डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार	०२१
०८	'डीडगर इपिल' (हिम्मतवाली इपिल) मुंडारी नाटक में चित्रित समस्याएँ प्रा.डॉ. गौतम भाईदास कुवर	०२३
०९	महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रीवादी चेतना प्रा.डॉ. योगेश पाटील	०२५
१०	विमुक्त जनजाति –कंजर जनजाति का विमर्शमूलक आख्यान : रेत डॉ. संजय रणखांबे	०२७
११	'हाय! हैंडसम' नाटक में चित्रित वृद्ध विमर्श प्रा.डॉ. संजयकुमार नंदलाल शर्मा	०३०
१२	'ध्रुवसत्य' उपन्यास में चित्रित आर्थिक संघर्ष की गाथा डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा	०३३
१३	आदिवासी संस्कृति पर आधुनिक प्रोद्योगिकी का बढता प्रभाव : विकास के परिप्रेक्ष में डॉ. नाना एन. गायकवाड	०३५
१४	मानवीय अस्मिता का जीवंत दस्तावेज – पोस्ट बॉक्स नं २०३ नाला सोपारा प्रा.डॉ. कल्पना पाटील	०३७
१५	हिंदी ग़ज़ल में दलित विमर्श प्रा.डॉ. ईश्वर ठाकुर	०३९
१६	हिंदी का विकास विमर्श प्रा.डॉ. विजय एकनाथ सोनजे	०४२
१७	आदिवासी विमर्श और हिंदी उपन्यास प्रा. सतीष दत्तात्रय पाटील	०४४
१८	हिन्दी दलित साहित्य की परम्परा श्री. करूणा पाटगिरि	०४५
१९	'सुनो शेफाली' : दलित युवती के संघर्ष की गाथा प्रा.डॉ. शहाजी बाला चव्हाण	०४७
२०	'अपनी सलीबें' में दलित विमर्श डॉ. श्रीकांत पाटील	०४९
२१	हिंदी कहानी साहित्य में नारी विमर्श लेफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील	०५१

'RESEARCH JOURNEY' International Mu... Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261
Special Issue 131 : हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

हिंदी कहानी साहित्य में नारी विमर्श

लेफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापूर.

भारतीय समाज व्यवस्था मे नारी प्राचीन काल से शोषित एवं पीडित जीवन जी रही है। 'रामायण' की सीता हो या 'महाभारत' की द्रोपदी हो इन ऐतिहासिक पात्रों को भी इस स्थिति मे गुजरना पडा है। सामंती शोषण व्यवस्था ने नारी को हमेशा अपना शिकार बनाया है। सर्वहारा समाज की नारी पुरुष प्रधान संस्कृति की नरमचारा है। युगो से उसपर पुरुष प्रधानता, धार्मिक अव्यवस्था और पूँजीवादी व्यवस्थाने अनेक जुल्म ढायें है। आधुनिक काल के आरंभ से नवजागरण युग तथा नारी मुक्ति आंदोलन के चलते भारतीय नारी जीवन मे भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

महात्मा फुले, शाहु महाराज, बाबासाहेब आंबेडकर, राजाराम मोहनराय, स्वामी विवेकानंद, महा. गांधी, विठ्ठलरामजी शिंदे जैसे समाज सुधारकों से प्रेरित होकर भारतीय नारी में अपने अधिकार के प्रति नवचेतना जागृत हुई। परिणामत: सदियों मे गुलामी की जिंदगी जिनेवाली नारी जागरुक होकर अपने अधिकार के प्रति आवाज उठाने लगी। जिसका प्रतिबिंब सन १९६० के बाद के हिंदी साहित्य में स्पष्ट रुप मे दिखने लगी। हिंदी साहित्यकारों ने नारी के इस विद्रोही रुप को बखुबी से चित्रित किया है। हिंदी साहित्य में जब भी नारी विमर्श की बात चलती है तो सम्राट मुन्शी प्रेमचंद की 'कफन' और 'बडे घर की बेटी' जैसी कहानियाँ नारी की पीडा को उजागर करती है। इनके उपरांत जैनेंद्र, कमलेश्वर, महादेवी वर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, मन्नू भंडारी, चित्रा मुदगल, लता शर्मा, रंजना जायस्वाल, किरण अग्रवाल, रंजनी गुप्ता, जया जादवानी, आदि रचनाकारों के कहानियों में नारी-विमर्श की भावना कुटकुटकर भरी हुई है। जया जादवानी 'अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है' इस संग्रह की पहली कहानी 'कयामत का दिन उर्फ कब्र से बाहर' कहानी की नायिका सुनिता नागपाल अच्छे घर की बहु है। घर छोडने के पश्चात उसे लोगों के गंदीनजरों का शिकार होना पडता है। अंत: वह अपने पति के घर वापस चली जाती है। उसे पता चलता है कि, अकेली औरत को अपने परिवार के बिना बाहर रहना बहुत कठिन है। जया की अन्य एक कहानी 'पलाश का फूल' एक सहाशी औरत की कहानी है। विवेच्य कहानी की अपूर्वा अपने पिता के खिलाफ विद्रोह करती है और शादीशुदा आदमी से विवाह करती है। रोहित के घरवाले उसे स्वीकारने से मना करते हैं। पति भी उसका विचार नहीं करता उसके अनुसार शरीर का आदान-प्रदान करना ही शादी है। इस बर्बरता भरी जिंदगी से उबकर पति का घर छोडती है। वह कहती है, हाँ मुझे मुक्ति चाहिए। इन सबसे और तुम से भी। तुम मेरे सपनों के पुरुष नहीं। पुरुष तो वह होता है जो कुछ दे कुछ ले, तुम ना कुछ दे सकते हो ना ले सकते हो। तुम्हारा न लेना मेरी बदनसीबी बन सकती है, न देना मेरी हार नहीं।१ अत: विवेच्य कहानी की नायिका अपूर्वा को अपनी अस्मिता की चिंता है, जो घर के चार दिवारों में बैठकर संभव नही है। अत: वह घर परिवारवालों से विद्रोह कर बैठती है।

ओमप्रकाश वाल्मिकी की कहानी 'जिनावर' में बिरजू की बहू का शोषण चित्रित है। विवेच्य कहानी में बिरजू की बहू का शोषण उसके ही ससूर चौधरी से होता है। इस कहानी के माध्यम से कहानीकार समाज के रीतिरिवाजों एवं पुरुषप्रधान संस्कृति में फँसी नारी की वेदना को दर्शाया है। इस कहानी की नायिका बिरजू की बहु है। जो एक अच्छे संस्कारित परिवार की है। परंतु ससुर चौधरी उसे हवस का शिकार बनाना चाहता है। वह इसका कडा विरोध करती है। वह अनेक यातनाएँ सहती है। परिणामत: ससुर उसे घर से निकाल देता है। अनेक संकटों का सामना करने के बावजुद भी बिरजू की बहू हार नहीं मानती। नौकर जगेसर के साथ उसे मायके भेज दिया जाता है। बिरजू की बहू जगेसर के पीछे-पीछे उदासी और बैचैनी से चली जा रही थी। जगेसर उसे उदासी का कारण पूछता है। तो तब बहु सच्चाई बताती है। में अपनी मरजी से मायके नही जा रही हूँ..... मुझे जबरदस्ती घर से निकाल दिया है। हमेशा -हमेशा के लिए।२ बिरजू की बहू बपना दु:ख हवेली के सभी लोगों से कहती है लेकिन उसे कोई नहीं समझ लेता उसका पति उसे कहता है, मेरे बाप पके खिलाफ एक लफ्ज बोली तो हाड-गोड तोड दुँगा। जिंदगी भर लूली-लँगडी बनके खाट पे पडी रहेगी..... औरत है तो औरत बनके रहो।३ अत: विवेच्य कहानी में बिरजू की बहू का कोई साथ नहीं देता सास भी सिर्फ दिलासा देती है। इतना कुछ होने के बावजूद भी बहू अपना चरित्र बनाए रखती है और चौधरी का कडा विरोध करती है। परिणामत: उसे हमेशा के लिए ससूराल छोडकर जाना पडता है।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की महिला लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रणी पंक्ति में आता है। उन्होंने नारी जीवन के विविध पहलूओं पर प्रकाश डाला है। जिनमें संघर्षशील नारी, परित्यक्ता नारी, अकेली नारी, पारिवारीक जिम्मेदारियों को खुदके कंधो पर ढोनेवाली नारी आदि सम्मिलित है। मैत्रेयी पुष्पा के नारी चित्रण में संवेदनाशीलता दिखाई देती है। समाज हो या परिवार संघर्ष के बिना अस्तित्व असंभव है। इसके सामाजिक और पारिवारीक दोनों स्तरों पर संघर्षकरना पडता है। 'बिछडे हुए' कहानी की चंदा गृहस्थी का बोझ अकेली उठाती है। चंदा का पति अचानक सन्यासी बनकर घर छोडकर चला जाता है। गरीबी के कारण चंदा को अनेक समास्याओं का सामना करना पडता है। गृहस्थी के संकटों को झेलती हुए वह कहती है, अपनी देह, देह नही मानी, हर संकट को झेलती रही वैसे तो घर में था भी क्या? जो पास था बेचडाला, खेत रहेन चढते-चढते बिक गया।४

आक्षेप कहानी की नारी पात्र रिमया विवाह पश्चात ससूराल में रहती है, पति परमेश्वर समाजसेवी प्रवृत्ति का व्यक्ति है। लोंगो की सेवा करने में ही वह धन्यता मानता है। परिणामके चलते गाँव का मुखियाँ रमिया की ओर शक की नजर से देखता है। कहानी के एक प्रसंग में वह कहता है, वैसे तो सब तरह से भली है, पर निछुद्दर है ससूरी। इतै-उतै मुँह मारत फिरत है।५

अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से आजतक नारी पीडित और प्रताडित रही है, उसका स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व हमेशा पीडित रहा है। परंतु स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद परिस्थिति में काफी तेजी से बदलाव हो रहे है। इसमे समाज सुधारकों का योगदान बहुत बडा है। आज वर्तमान परिवेश में नारी जीवन के आयाम बदल रहें हैं। आज की नारी अन्याय अत्याचार के विरोध में खुलेआम बोल रही है। अत: हिंदी के कहानीकार 'नारी विमर्श' में सफल और गहरी अभिव्यक्ति देने में सफल सिध्द् हुए हैं।

संदर्भ सूची

१) जया जादवानी, 'अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है,' 'पलाश का फूल,' नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण.
२) साहित्य सौरभ, प्रकाशक डॉ. डी. व्ही. मुळे, कुलसचिव शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर पृष्ठ ६८, प्रथम २०१४
३) वही पृष्ठ, ६८
४) मैत्रेयी पुष्पा, ललमनियाँ (कहानी संग्रह) 'रिजेक'ए राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ७७, प्रथम १९९७
५) मैत्रेयी पुष्पा, चिहनार (कहानी संग्रह) आक्षेप, आर्य प्रकाशन, मंडल दिल्ली, पृष्ठ १०८, प्रथम १९९७